Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/242
Peer Reviewed & Refereed Journal, NOV-DEC 2024, Vol- 13/86

भारत और चीन के वृद्ध जनों की वर्तमान तुलनात्मक स्थितियॉं

डॉ सहदेव सिंह (पीएच. डी.)
डॉ भीमराव आम्बेडकर वि0 वि0 आगरा

Paper Received On: 20 NOV 2024
Peer Reviewed On: 24 DEC 2024
Published On: 01 JAN 2025

Abstract

वृद्धावस्था एक मानवीय अनिवार्यता, स्वाभाविक जैविकीय प्रक्रिया एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया का ही अंग है। जिसमें वह शेष जीवन के प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण विकसित कर लेता है जिससे वह स्वयं को विघटित तथा दबा हुआ व उपेक्षित महसूस करने लगता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वृद्धावस्था की प्रमुख समस्या; परिवार व समाज के साथ उचित समायोजन न करने की है। सामाजिक अधिकार, पारिवारिक प्रस्थिति, सामाजिक सहभागिता, एकाकीपन, आर्थिक प्रस्थिति आदि विभिन्न चरों के सापेक्ष, भारत में वृद्धजनो की स्थिति विश्व के किसी भी देश के वृद्धजनों की तुलना में अच्छी है।

पारिभाषिक शब्दः *सामाजिक अधिकार, पारिवारिक प्रस्थिति, सामाजिक सहभागिता, एकाकीपन।*

शोध प्रविधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन को सम्पादित करने के लिए अध्ययन समस्या की प्रकृति, अध्ययन के महत्व एवं उद्देश्यों के अनुरूप ''तुलनाात्मक– ऐतिहासिक'' (Analytical- Historical) शोध प्ररचना को चुना है; क्योंकि इस शोध प्ररचना का मौलिक उद्देश्य अध्ययन समस्या से सम्बन्धित प्राप्त मौलिक जानकारी तथा प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर शोध अध्ययन का तार्किक विश्लेषण करना है। तथ्य निर्वचन हेतु द्वैतीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाः भारत में वृद्धजनो की स्थिति चीन के वृद्धजनों की तुलना में अच्छी है।

विश्लेषण एवं निष्कर्षः

वर्तमान मशीनी युग में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग दुनिया में मन होने के कारण 'बूढे' घर में रहते हुए भी उपेक्षित हैं। क्या वे केवल दो समय का भोजन, वस्त्र और सिर छिपाने के लिए चारपाई भर स्थान के मोहताज बनकर रह गए हैं? नई पीढी को अपने कार्यो में पुरानी पीढी का दखल तो दूर; सलाह लेना तक स्वीकार्य नहीं हैं।

वृद्धावस्था की अवधारणा :

सामान्य रूप से वृद्धावस्था में व्यक्ति उस समय कार्यकलापों में भाग लेने योग्य नहीं रहता है, जो एक औसत वयस्क के लिए विशिष्ट होती हैं। प्रायः शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं में ह्रास तथा सामाजिक कार्यकलापों से विलगता की भावना वृद्धावस्था का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। शरीर में परिवर्तन आना एक स्वाभाविक जैवकीय प्रक्रिया है तथा इसी प्रक्रिया में मनु य में कुछ जैवकीय परिवर्तन घटित होते हैं, जिनके लक्षण मनुष्य के शरीर में भी दिखाई देने लगते हैं। प्रायः लोगों की यह धारणा है कि 'बुढापा' जीवन के उत्तरार्द्ध की गति होता है, लेकिन यह धारणा गलत है क्योंकि 'वृद्धावस्था' किसी भी प्रकार से जीवन के उत्तरार्द्ध की गति नहीं है। हालांकि यह सही है कि वृद्धावस्था में ाारीरिक ाक्ति में अवश्य कमी आ जाती है लेकिन अनेक वृद्ध अपनी इस शारीरिक कमी को अपनी दक्षता, योग्यता व बौद्धिकता के द्वारा पूरा कर लेते हैं। वृद्धावस्था में जीवन की सफलता प्रमुख रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति ने

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपनी प्रौढावस्था में इस जीवन की वास्तविकता के प्रति अपने को किस प्रकार से तैयार किया है? मानसिक विघटन, व्यक्ति को लापरवाह, किसी बात का ध्यान न रखने वाला, आत्मकेन्द्रित एवं समाज से सही समायोजन न होने वाला बना सकता है। इसके बावजूद सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति अपने सम्बन्ध में या दूसरों के सम्बन्ध में तथा अपने शेष जीवन के प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण विकसित कर लेता है तो यह स्थिति किसी भी व्यक्ति को शीघ्र ही अक्षम बना सकती है। जो व्यक्ति प्रौढावस्था में अपने जीवन के प्रति रूचि को खोते जाते हैं सम्प्रति वे शीघ्र ही विघटित व दबा हुआ महसूस करने लगते हैं।

वृद्धावस्था को निर्धारित करने वाले तत्व :
- **उम्र/आयु**
- **शारीरिक स्थिति/परिवर्तन**
- **चिकित्सीय जाँच/अक्षम**

पूर्वी एवं पश्चिमी देशों में वृद्धों की समस्याएं उनके विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों के कारण भिन्न–भिन्न हैं। पश्चिमी समाज युवजन केन्द्रित, व्यक्तिवादी और भौतिकतावादी है। वहाँ माता–पिता तथा सन्तान के मध्य सम्बन्ध भावनात्मक आधार पर आधारित नहीं होते। जबकि पूर्वी देशों अर्थात् भारत में माता–पिता से सन्तान के सम्बन्ध भावनात्मक अधिक होते हैं। भारतीय जीवन में व्यक्ति का परिवार से बिछुडना कभी नहीं होता। माता–पिता, बच्चों के पालन–पोषण एवं उनकी सफलता को अपने जीवन का प्रमुख ध्येय समझते हैं। पुत्र अपने परिवार में अपने पिता की जिम्मेदारियों को स्वीकार करना अपना परम्परागत नैतिक कर्तव्य समझता है। भारत में परिवार ही केवल ऐसी संस्था है जिससे वृद्धावस्था की सुरक्षा की अपेक्षा की जा सकती है किन्तु बदली हुई परिस्थितियों व वर्तमान परिवेश में वृद्धावस्था की सुरक्षा के लिए कुछ वैकल्पिक व्यवस्था करना आवश्यक सा कर दिया है।

नैतिक अवमूल्यन व मानव मूल्यों के संकट काल में जहाँ जनसामान्य को अनेक प्रकार के अवरोधों का सामना करना पड़रहा है। वहीं जीवन के अंतिम पडाव के लोगों का विभिन्न समस्याओं से जूझना भी स्वाभाविक है।

भारत में, बीते बीस वर्षो में साठ वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या में तिरानवे प्रतिशत (93 प्रतिशत) तथा सत्तर वर्ष से अधिक अवस्था के नागरिकों की तादात में एक सौ एक (101 प्रतिशत) की वृद्धि हुई है।[8]

वहीं चीन में वृद्धजनों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है। वर्ष 2018 के अन्त तक चीन में 60 वर्ष या इससे अधिक उम्र के व्यक्तियों की संख्या 24 करोड़ 90 लाख (चीन की कुल जन संख्या का लगभग 18.10 प्रतिशत) थी, जिसके वर्ष 2035 तक चीन की कुल जनसंख्या का 30 प्रतिशत हो जाने की सम्भावना है।

मात्रृ देवो भव, पित्रदेवो भव जैसे सामाजिक मूल्य, विश्व में अन्यत्र कही नहीं हैं।

'वृद्धौ च मातपितरौ साध्वी भार्या सुतः शिशुः।
अपकार्य शंत कृत्या भर्तव्या मनुरब्रवीत।।''

मनु ने घोषित किया है कि सैकड़ों बुरे कर्मों का सम्पादन करना पड़े तब भी वृद्ध माता–पिता, साध्वी पत्नी एवं शिशु का भरण–पोषण करना चाहिए।

यही कारण है कि भारत में वृद्धजनो की स्थिति विश्व के किसी भी देश के वृद्धजनों की तुलना में अच्छी है।

वृद्धजनों की स्थिति के तुलनात्मक निर्धारक चर–

(1) पारिवारिक अधिकार

(2) सामाजिक अधिकार

(3) राजनैतिक

(4) धार्मिक

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(5) सामूहिक सहभागिता

वृद्धों की स्थिति के सन्दर्भ पाँच वर्गों में बॉटें गए हैं–

1. स्वतन्त्रता
2. भागीदारी,
3. देखभाल,
4. आत्म संतुष्टि और
5. गरिमा हैं।

पूर्वी एवं पश्चिमी देशों में वृद्धों की समस्याएं उनके विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों के कारण भिन्न–भिन्न हैं। पश्चिमी समाज युवजन केन्द्रित, व्यक्तिवादी और भौतिकतावादी है। वहाँ माता–पिता तथा सन्तान के मध्य सम्बन्ध भावनात्मक आधार पर आधारित नहीं होते। जबकि पूर्वी देशों अर्थात् भारत में माता–पिता से सन्तान के सम्बन्ध भावनात्मक अधिक होते हैं। भारतीय जीवन में व्यक्ति का परिवार से बिछुडना कभी नहीं होता। माता–पिता, बच्चों के पालन–पो ाण एवं उनकी सफलता को अपने जीवन का प्रमुख ध्येय समझते हैं। पुत्र अपने परिवार में अपने पिता की जिम्मेदारियों को स्वीकार करना अपना परम्परागत नैतिक कर्तव्य समझता है। भारत में परिवार ही केवल ऐसी संस्था है जिससे वृद्धावस्था की सुरक्षा की अपेक्षा की जा सकती है किन्तु बदली हुई परिस्थितियों व वर्तमान परिवेश में वृद्धावस्था की सुरक्षा के लिए कुछ वैकल्पिक व्यवस्था करना आवश्यक सा कर दिया है।

यद्यपि, वर्तमान भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर पड़ गई है जिस कारण बड़ी संख्या में वरिष्ठ व्यक्तियों की देखभाल उनके परिवारों द्वारा नहीं की जा रही है। परिणामतः अनेक व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम वर्षो को अकेलेपन में बिताने के लिए विवश ,भावनात्मक रूप से उपेक्षित और भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों से अभावग्रस्त हैं। भारतीय समाज में वृद्ध, महिलओं, विधवाओं एवं वृद्ध व्यक्तियों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार है। आज परिवारों में अतीत की पारिवारिक व्यवस्था एवं वरिष्ठजनों के सानिध्य में काम करने की इच्छा व्यक्त की जा रही है। यथोचित स्वस्थ बुजुर्गों की समस्याओं के अलावा विकलांग और वृद्धावस्था की समस्याओं का एक विशेष प्रकार से निदान किया जा रहा है।

अध्ययन किये गए द्वैतीयक तथ्यों के **विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं–**

1. भारत की तुलना में चीन के निवासी वृद्धजन, परिवार तथा समुदाय के व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का अधिक अनुभव करते हैं। वे परिजनों तथा समुदाय के लोगों के साथ संवेगात्मक भावनाओं के शिकार हो जाते हैं जबकि भारत में वृद्धजनों को पारिवारिक सहयोग स्नेह एवं सम्मान प्राप्त है।
2. भारत की तुलना में चीन के निवासी वृद्धजन, आत्म सम्मान के प्रति समझौता करते हुए परिलक्षित होते हैं।
3. चैन में वृद्धजनों से परिवार की सत्ता का युवाओं व महिलाओं में हस्तान्तरण हो जाने से परिवार में उनकी स्थिति उनके प्रति उपेक्षापूर्ण रवैये के कारण दयनीय हो गयी है। जबकि भारत में आधुनिकता का प्रभाव दृष्टिगत होते हुए भी वृद्धजनों को तुलनात्मक रूप से अधिक पारिवारिक स्नेह एवं सम्मान प्राप्त है।
4. भारत की तुलना में चीन में, वृद्धजनों का वर्तमान सन्दर्भों में परिवारों में भौतिकतावादी संस्कृति तथा व्यक्तिवादिता प्रभावी होने से परिवर्ती परिस्थितियों में परिजनों के साथ सामंजस्य/समायोजन करना कठिन (जटिल) हो गया है। परिवार में उनकी स्थिति कर्ता/मुखिया की न होकर अब आश्रित जैसी हो गयी है। अतः वे प्रायः तनाव ग्रस्त रहते हैं। इस अवस्था में उदासीन/तटस्थ होकर जीवनयापन कर रहे हैं।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. भारत में वृद्धजनों के अधिकारों के प्रति सरकार सजग है, जबकि चीन के निवासी वृद्धजन सरकारी स्तर पर भी उपेक्षित हैं। उनकी दक्षता, बौद्धिकता एवं अनुभवों की अनदेखी करना, परामर्श तक न लेना, विचार–विमर्श तक न करना, उनके वृद्धावस्था सामंजस्य में बाधक कारक हैं।

References

Almond, G. & Verba, S. (2013), The Civic Culture: Political Attitudes and Democracy in Five Nations. Princeton: Princeton University Press.

Andreas Hoff. (2008). "Tacking Poverty and Social Exclusion of Older People-Lessons from Europe", Oxford Institute of Ageing Working Paper 308, October 2008.

Feng Shaohang.(2010), "On the old-age discrimination from Governmental institutional Arrangement and the Non-institutional Exclusion", Journal of Huaihua University, 2010.

Galabuzi, G. (2006), Canada's Economic Apartheid: The Social Exclusion of Racialized Groups in Canada's New Century. Toronto: Canadian Scholar's Press.

Gerda Jehoel-Gijsbers and Cok Vrooman. (2008), "Social Exclusion of the Elderly: A Comparative Study of EU Member States", ENEPRI Research Report No.57.

Grace-Edward Galabuzi and Cheryl Teelucksingh. (2010), Social Cohesion, Social Exclusion, Social Capital. Region of Peel Immigration Discussion Paper.

Hilary Silver. (2007). "Social Exclusion: Comparative Analysis of Europe and Middle East Youth," Middle East Youth Initiative Working Paper

Li Yang. (2007), "From social exclusion to family exclusion: an analysis regarding the elderly in a 18 transitional society", Explore, 2007.

Lou Weiqun & He Xuesong. (2008), "The Existing Environment of the Scraps Collecting Elderly in Hongkong: A Perspective of Social Exclusion", China South Population, 2008(3).

Marc Hooghe, Sarah Botterman and Tim Reeskens. (2010), Is a Composite Indicator for Social Cohesion Possible? Durkheimian Theory and Empirical Evidence from a Belgian Survey. Paper presented at the 17th world congress of sociology, 11-17 July 2010, Sweden.

Maria Evandrou (2000), "social inequality in later life: the socio-economic position of older people from ethnic minority groups in Britain", Population Trends 101, Autumn 2000, national statistics.

Omdivar, R. & Richmond, T. (2003), "Immigrant Settlement and Social Inclusion in Canada", Laidlaw Foundation Working Paper Series.

Osberg, L. (2003), The Economic Implications of Social Cohesion. Toronto: University of Toronto.

Ou Yangpeng. (2008), "Urban Mobility and Anti Social Exclusion: The Inspiration of Barrier-free Transportation Planning Measures from Abroad Cities", Modern City Studies, 2008(8).

Silver, H. (2004), "Social exclusion and social solidarity: Three paradigms", International Labour Review, Vol. 133.

Wenmeng Feng. (2006), "Migrants life in Shanghai: economic situation, social adaptation, children's education and support to their parents", (Japanese), Japanese Society.), Development Studies, 16(3), Tokyo:

Cited Websites:

http://en.wikipedia.org/wiki/Social_cohesion.

http://en.wikipedia.org/wiki/Social_exclusion#cite_note

http://epp.eurostat.ec.europa.eu/portal/page/portal/structural_indicators/indicators/social_cohesion

http://www.idea.gov.uk/idk/core/page.do?pageId=1121339

http://www.idea.gov.uk/idk/core/page.do?pageId=71633

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies